जब लोग आपकी नकल करने लगे तो समझ लेना चाहिए कि आप सफल हो रहे है।
– अज्ञात

लू के ये थपेड़े

कई इलाकों में तापमान 45 डिग्री को पार कर चुका है। राजस्थान के चुरू में तो यह 50 डिग्री पर जा पहुंचा है, जो पूरी दुनिया का उच्चतम तापमान था। राजधानी दिल्ली में सफदरजंग में यह मई महीने का 18 वर्षों का रेकॉर्ड तोड़ चुका है।

मनोज शर्मा।

देश में इस बार गर्मी ने देर से दस्तक दी लेकिन अभी उसने पूरे उत्तरी और मध्य भारत को अपनी चपेट में ले लिया है। कई इलाकों में तापमान 45 डिग्री को पार कर चुका है। राजस्थान के चुरू में तो यह 50 डिग्री पर जा पहुंचा है, जो बीते मंगलवार को पूरी दुनिया का उच्चतम तापमान था। राजधानी दिल्ली में सफदरजंग में यह मई महीने का 18 वर्षों का रेकॉर्ड तोड़ चुका है।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अभी चल रहे लू के ये थपेड़े अपना भरपूर असर छोड़कर जाएंगे। जून में लू चलती भी है तो मॉनसून संबंधी गतिविधियों के चलते पारा जल्द ही नीचे आ जाने की उम्मीद बनी रहती है। मई में तो ऐसा कोई इत्मीनान भी नहीं होता। ऐसी भीषण गर्मी यूं तो हर किसी के लिए तकलीफदेह साबित होती है, लेकिन इस बार इसके साथ यह दुर्भाग्य भी जुड़ा है कि लंबे लॉकडाउन और बेरोजगारी के मारे अनगिनत प्रवासी मजदूर अपने गांव जाने की प्रक्रिया में बीबी–बच्चों समेत कहीं न कहीं फंसे हुए हैं। कई लोग पैदल ही गांव के लिए सैकड़ों मील लंबे सफर पर निकल पड़े हैं।

हजारों की संख्या में ऐसे परिवार हैं जो ट्रेन मिलने की आस में स्टेशनों तक पहुंच गए हैं लेकिन ट्रेन कैंसल होने या जगह न मिलने के चलते सड़क पर ही डेरा डाले हुए हैं। किराये की जगह छूट गई है, और किसी मकान मालिक ने रियायत कर रखी हो तो इस डर से वापस जाना मुश्किल है कि दोबारा सही समय पर स्टेशन न पहुंच पाए तो अगली ट्रेन भी छूट जाएगी। जिन्हें ट्रेन में बैठने का मौका मिल गया, वे भी भोजन–पानी के अभाव और ट्रेन के अतिशय विलंब अथवा रास्ता भटकने के चलते अपनी तकलीफों से पार नहीं पा रहे। भारतवासियों के इतने बड़े हिस्से की ऐसी दुर्दशा की कोई और मिसाल 1947 में देश विभाजन के वक्त ही किसी की स्मृति में हो तो हो।

सुप्रीम कोर्ट ने कुछ दिन पहले इस मामले में कुछ भी कहने से मना कर दिया था, लेकिन लोगों का हाल देखकर आखिरकार उसको दखल देना पड़ा। बीते मंगलवार को मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए अदालत ने केंद्र और राज्य सरकारों को आदेश दिया कि इन सभी श्रमिकों के लिए खाना, पानी और आश्रय का उपयुक्त इंतजाम करते हुए वे इन्हें सुरक्षित घर पहुंचाने की मुफ्त व्यवस्था करें। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में चुनी हुई सरकारों को यह काम अपनी पहल पर करना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय उनमें से ज्यादातर एक–दूसरे पर दोष मढ़ने की कवायद को ही अहमियत देती रहीं।

काफी टालमटोल के बाद मजदूरों को घर भेजने का काम शुरू भी हुआ तो उनकी आर्थिक बदहाली का ख्याल किए बगैर अनाप–शनाप किराये का बोझ उनपर लाद दिया गया। बहरहाल, अब जब अदालत ने स्याह–सफेद में अपनी बात रख दी है तब उससे कतराने का कोई और बहाना न खोजा जाए और मजदूर तथा उनके बाल–बच्चे स्टेशन पर हों या सड़क पर या ट्रेनों में, उनको जल्दी और सुरक्षित घर पहुंचाने की निःशुल्क व्यवस्था की जाए।

अच्छे विचार

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। इस गहरी शांति की अवस्था में आने हेतु, शुद्ध, अच्छे विचार बनाने के लिए और ध्यान लगाने के लिए हमें बुद्धि को प्रशिक्षित करना चाहिए। हमारे बेकार के विचार हम पर बोझ बन सकते हैं। बहुत सारे विचार और शब्द बनाने की हमारी आदतें हमारी बुद्धि को थका सकती हैं। हमें पूछना चाहिए, "हम शुद्ध विचार की आदत किस तरह से बना सकते हैं?" कौन मौन की इच्छा करता है? ये मैं हूं, आंतरिक मैं, आत्मा। जैसे ही मैं अपने शरीर से अलग होती हूं और दुनिया की दिशाओं की तरफ मुड़ती हूँ, मैं भीतर की ओर चली जाती हूं। हवा की फुसफुसाहट के रूकने से पूर्णतया शांत हुई एक झील की तरह, आंतरिक आत्म चमकता है, और आत्मा के गुण प्रतिबिंबित होते हैं।

संपादकीय

साझेदारी है जरूरी

कोविड–19 संबंधी अनुसंधान एवं विकास कार्य में विश्व स्तर पर जारी प्रयास सफल होते हैं तो भारतीय दवा उत्पादकों ने दिखा दिया है कि वैक्सीन की राह देख रही दुनिया के लिए ढेरों किफायती वैक्सीन बनाने में साझेदारी बेहद जरूरी है। हमारा फाउंडेशन और भारत कोएलिशन फॉर एपिडेमिक प्रिपेयर्डनेस के संस्थानिक सदस्य हैं। यह संस्था कोविड–19 की वैक्सीन बनाने को लेकर दुनिया भर में जारी प्रयासों की देखरेख करती है। भारत को ACT जैसे बहुआयामी प्रयासों को तेज करने में भी भूमिका निभानी है क्योंकि अगर हम कोविड–19 को पीछे छोड़ना चाहते हैं तो ऐसे अंतरराष्ट्रीय प्रयास बेहद जरूरी हैं। मैंने पिछले एक दशक से भी ज्यादा समय से भारत के जबर्दस्त उभार को करीब से देखा है। इसीलिए मैं इसकी मजबूती और संभावनाओं में अन्य लोगों के मुकाबले कहीं ज्यादा यकीन रखता हूं। एक साझेदार के तौर पर बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन इस वैश्विक संकट का समाधान तलाशने में भारत के साथ खड़ा है। भारत दुनिया भर के अति गरीब देशों में लाखों जिंदगियां बचाने में अहम भूमिका निभा सकता है। वैक्सीन और उपचार के अलावा भी भारत दुनिया को सबसे अलग हल देने की क्षमता रखता है। उदाहरण के तौर पर जांच और मेडिकल उपकरणों का तेजी से विकास और इस्तेमाल। भारत ने मूल टेस्ट किट से लेकर वेंटिलेटर तक ऐसे अनेक आधुनिक मेडिकल उपकरण विकसित किए हैं जिनका इस्तेमाल दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में भी किया जा सकता है जहां बिजली की आपूर्ति अनियमित या लगभग ना के बराबर है।

इसमें वैश्विक सहयोग की आवश्यकता भी होगी क्योंकि इस चुनौती से निपटना किसी एक देश या एक कंपनी के लिए मुश्किल होगा।

दवा की खोज

मार्क सुजमैन।

मैं पिछली बार नवंबर में भारत आया था। तब 'महामारी' जैसे शब्द का कहीं नामोनिशान भी नहीं था। महज छह महीने बाद अभी किसी और चीज के बारे में शायद ही कोई बात करता है। जैसा कि बिल गेट्स ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत के दौरान कहा कि कोविड–19 के मामले में भारत का अब तक का प्रयास उत्साहवर्द्धक है। सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के कारण भारत में जान और जीविका का नुकसान यूरोपीय और अमेरिकी देशों के मुकाबले काफी कम है। हमारा फाउंडेशन उत्तर प्रदेश और बिहार में तकनीकी सहयोग, डिजिटल उपकरण, स्वास्थ्यकर्मियों को प्रशिक्षण समेत अन्य कार्यक्रमों के जरिए सरकार के इन प्रयासों में अपना योगदान कर रहा है।

दुनिया के बाकी देशों की तरह ही कोविड–19 के खिलाफ भारत की लड़ाई मुख्य रूप से सामाजिक दूरी, दुकानें बंद करने, लोगों को घरों पर रहने के आदेश और यात्राएं रद्द करने जैसे उपायों तक सीमित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस बीमारी के इलाज के लिए कोई दवा उपलब्ध नहीं है और न ही अब तक कोई ऐसी वैक्सीन बनी है जो लोगों को इस बीमारी का शिकार होने से बचा सके। अच्छी बात यह है कि भारत

इस वैश्विक चुनौती को भी संबोधित कर रहा है। यहां के खोजियों, विद्वान वैज्ञानिकों और दवा निर्माताओं की क्षमता, दवाओं के निर्माण में उच्च स्तरीय सुरक्षा मानकों के पालन की भावना और सहयोग की परंपरा इस देश को वहां ला खड़ा करती है जहां से यह दुनिया को इस महामारी से बाहर निकलने का रास्ता दिखा सकता है।

आखिर कोविड–19 को हराने के लिए जिन उपायों की जरूरत है, वे नई खोज से ही प्राप्त होंगे। समानता यह तय करेगी कि यह सभी के लिए न केवल उपलब्ध हों बल्कि किफायती भी हों। साथ ही इसमें वैश्विक सहयोग की आवश्यकता भी होगी क्योंकि इस चुनौती से निपटना किसी एक देश या एक कंपनी के लिए मुश्किल होगा। अगर हम उन पहलुओं पर विचार करें जिनमें भारत ने अब तक सफलता हासिल की है, तो हम जान पाएंगे कि यही वह समय है जब भारत दुनिया की अगुआई कर सकता है। जब बात हो नई खोज की तो वैश्विक स्वास्थ्य अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में भारत पहले ही महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त कर चुका है।

हमारे फाउंडेशन की सहयोगी सेरम इंस्टिट्यूट और भारत बायोटेक समेत विभिन्न भारतीय कंपनियों द्वारा बनाई गई वैक्सीन की बदौलत अब दुनिया भर में खसरा, न्यूमोनिया और रोटावायरस जैसी बीमारियों से पहले के मुकाबले कम बच्चों की मौत होती है। अब जबकि सबका ध्यान कोविड–19 पर है, ऐसे में यही दक्षता उच्च गुणवत्ता वाली किफायती वैक्सीन बनाने में भारत की वैक्सीन इंडस्ट्री के काम आएगी। यही नहीं, भारत पहले ही कई ऐसी एंटी वायरल दवाएं बना रहा है जिनका इस्तेमाल कोविड–19 के हल्के संक्रमण के उपचार में किया जा सकता है।

दवाइयों के उत्पादन और दुनिया भर में उनकी सप्लाई के लिए हमारा फाउंडेशन भारतीय फार्मा कंपनियों के साथ मिलकर बड़ी अमेरिकी दवा कंपनियों द्वारा निर्मित उत्पाद तकनीकें भारतीय दवा कंपनियों को देने की संभावना भी तलाश रहा है। केवल वैक्सीन और दवाइयों का विकास ही नहीं बल्कि उच्च मानकों के मुताबिक बड़ी मात्रा और कम लागत में इनके उत्पादन के मामले में भी भारत ने अपनी क्षमता को साबित किया है।

अष्टयोग-5071

3		4	6	7		
2	33		36		27	
	6	5		3	2	1
4	30		27		31	6
	2		4			7
6	36	6	32	4	34	
5		7			3	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5070 का हल

3	7	6	1	2	4	5
2	33	1	23	6	33	6
5	7	2	4	1	6	3
4	28	4	27	4	36	4
1	2	3	4	5	6	7
6	37	7	38	7	33	2
7	6	5	4	3	2	1

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

अन्य विशेषज्ञों की काफी कमी

मोहन। आधुनिक तकनीक की भी अपनी भूमिका है। जैसे एआई का इस्तेमाल तेजी से जांच करने और कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग में किया जा सकता है। भारतीय स्टार्ट–अप्स पिछले कुछ समय से ऐसे पायलट प्रॉजेक्ट्स को सफलतापूर्वक अंजाम दे रहे हैं। यह तकनीक ऐसी जगहों के फ्रंटलाइन वर्कर्स के काफी काम आ सकती है जहां डॉक्टरों, रेडियोलजिस्ट और अन्य विशेषज्ञों की काफी कमी है। आखिर में वैश्विक साझेदारी के स्तर पर देखा जाए तो भारत ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, निजी कंपनियों, सार्वजनिक अनुसंधान संस्थानों और शिक्षाविदों के साथ मिलकर किए गए कामों में बेहतरीन नतीजे प्राप्त किए हैं। उदाहरण के तौर पर रोटा वायरस की वैक्सीन 'रोटोवैक' एक जॉइंट वेंचर है जिसमें भारत सरकार, भारत बायोटेक, अंतरराष्ट्रीय गैर लाभकारी संस्था पाथ, यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हेल्थ और अन्य संस्थाएं शामिल हैं।